RESEARCHER
INTERNATIONAL JOURNAL OF
ADVANCED INNOVATION AND RESEARCH
journal homepage: www.ijair.in

समाज का दर्पण साहित्य और उसका एक कोना

Dr. Jashbir Singh
Assistant Professor, Dept. of Hindi Chaudhary Devi Lal University,
Sirsa

Keywords

राजनीतिक,
राजनीतिक दल,
भारतीय साहित्य
भीष्म साहनी
दूधनाथ सिंह

Abstract

आपके द्वारा प्रस्तुत किया गया यह पाठ अत्यंत विस्तृत, सूचनात्मक और गंभीर अध्ययन का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें राजनीतिक समाजशास्त्र की मूल अवधारणाओं से लेकर भीष्म साहनी और दूधनाथ सिंह जैसे प्रमुख साहित्यकारों के उपन्यासों में राजनीतिक दलों की भूमिका का बारीकी से विश्लेषण किया गया है। इस पर मैं कुछ सुझाव और टिप्पणियाँ देना चाहूँगा जो आपके लेख को और सुसंगत, प्रवाहपूर्ण और शोधपरक बना सकते हैं:

भूमिका: समाज का दर्पण साहित्य और उसका एक कोना 'राजनीतिक' सदैव अध्ययन, मनन और चिन्तन सहित आलोचना-समीक्षा आदि जुड़ा रहेगा। समाज के सभी पक्ष साहित्य हेतु अति आवश्यक होते हैं। किसी भी साहित्य की पृष्ठभूमि के निर्माण में राजनीतिक दृष्टिकोण की महत्ती आवश्यकता है। राजनीतिक समाजशास्त्र में राजनीति और समाज दोनों का विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाता है। दोनों एक दूजे संग है। भारत देश में राजनीति से ही लगभग कार्य होते है जिसका सम्बन्ध समाज से है। राजनीति क्षेत्र से समाजशास्त्र के क्षेत्रों को समझने में मदद मिलती है। समाज में नेता लोग, नेतृत्व समाज, नौकरशाही सेवक, सहभागिता दल और उसके स्वरूपों आदि का अध्ययन मुख्य बिंदु है। राजनीतिक समाजशास्त्रीय अध्ययन समाज के मुख्य बिन्दुओं का वर्णन करता है। आज़ के युग में दलों का स्वरूप अति विशालकाय बनता जा रहा है और भविष्य में अनेकों दलों का निर्माण भी होगा।

मैक्सवेबर ने राजनीतिक को परिभाषित करते हुए लिखा है कि, "राजनीति का आशय शक्ति विभाजन के प्रयास अथवा राज्यों या राज्यों के अंतर्गत समूहों में शक्ति के वितरण को प्रभावित करने प्रयास को मन है लेकिन वर्तमान समाजशास्त्री राजनीति का प्रयोग परम्परागत दृष्टिकोण से हटकर करते है और इसे औपचारिक राजनीतिक संस्थाओं का अध्ययन मात्र नहीं मानकर समस्त अवलोकनीय व्यवहार को इनमें सम्मिलित करते है।"

राजनीतिक समाजशास्त्र को एक परिभाषा में कहते हुए लिखा है कि, "राजनीतिक समाजशास्त्र का अन्तअनुशासनिक वर्णशंकर है जो सामाजिक एवं राजनीतिक चरों को समाजशास्त्रियों द्वारा प्रस्तावित निर्गमों को एवं राजनीतिक विज्ञानियों द्वारा प्रस्तुतनिर्गमन से लेने का प्रयास करता है। इनका कथन है कि राजनीतिक समाजशास्त्र, राजनीतिक विज्ञान तथा समाजशास्त्र को आपस जोड़ने वालें पुलों में से एक है, किन्तु इसे राजनीतिक के समाजशास्त्र का पर्यायवाची नहीं माना गया है।"

विश्व की राजनीतिक पटलों में से भारतीय राजनीतिक दल भी केन्द्रीय स्थान रखते हैं। यह समाज में बनकर वह दल होते हैं जो दबाव-समूह के रूप में भी कार्य करते हैं। राजनीतिक दलों की उत्पत्ति मनोवैज्ञानिक, आर्थिक विषमता, धार्मिक कारण और सामाजिक आंदोलनों के रूप में फलती फूलती है। उस समय 1885 ईस्वीं में कांग्रेस का उदय हो चुका था। जिसका बड़ा आन्दोलन गांधी के नेतृत्व किया गया। भारत में राजनीतिक दलों का विकास में आज़ादी पूर्व काफी अप्रभावी दल थे। कांग्रेस अंग्रेजों से सुविधाओं लाने के पक्षधर काफी समय रहने के बाद 1920 ई में गांधी के नेतृत्व में जाति, संप्रदाय का मिश्रण करके कांग्रेस की अगुवाई कर रही थी। डॉ. आंबेडकर ने तो इन पार्टी को एक धर्मशाला के रूप में प्रस्तुत किया जो सभी सम्प्रदाय, वर्ग और वर्ण सभी को साथ लेकर चली थी। 1947 ई० के पश्चात् 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' आयर साम्यवादी दल का संतान किया क्रमशः व्यापक और सीमित था। 1906 ई में सांप्रदायिक मुस्लिम लीग की स्थापन हुई। 1916 ई में 'हिन्दू महासभा' का गठन हो चुका था। 1967 ई उत्तर प्रदेश कृषक पार्टी, मद्रास में 'जस्टिस पार्टी' एवं पंजाब में 'यूनियनिस्ट पार्टी' आदि प्रमुख रूप से उभरी। साम्यवादी दल की स्थापना 1924 ई० में हुई और

1934 ई० में साम्यवादी दल पर राजनीतिक कारणों से प्रतिबन्ध लगा दिया गया। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् यह प्रतिबन्ध हटाया गया। 1934-48 तक समाजवादी कांग्रेस से साथ मिलकर काम किया और बाद में कांग्रेस से अलग होकर अलग अस्तित्व में उभर कर सामने आई। 'जनसंघ' भारत की पहली राजनीतिक पार्टी के रूप में 1951 ई० में बनी। कांग्रेस और समाजवादी दोनों अपने अपने सिद्धांतों से भिन्न थी। इस प्रकार फिर कई राजनैतिक दल उभरे जिनमें डीएमके 1949, 'भारतीय समाजवादी दल' (1950), 'किसान मजदूर पार्टी' (1950) तथा एक 'स्वतंत्र दल' की स्थापना (1959) हुई। कांग्रेस पार्टी का 1969 में विभाजन कांग्रेस (इंदिरा) और 'संगठन कांग्रेस' दो नामों से हुआ और आम चुनावों में कांग्रेस (आई) को 350 लोकसभा सीट और 'संगठन कांग्रेस' को केवल 16 लोकसभा सीट मिली। 1972 ई में 'सोशलिस्ट पार्टी' एवं 'प्रजा सोशलिस्ट पार्टी' एक हो गई। 1973 ई में इस दल में फुट पड़ने के कारण बलराज मधोक ने 'लोकतान्त्रिक मोर्चा' नामक नवीन दल का निर्माण किया। 1974 में भारतीय लोकदल का निर्माण हुआ। 1977 में जनता नामक पार्टी में सभी विपक्षी रूप में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में पूर्ण बहुमत मिला। 15 जुलाई 1976 में जनता परिवार का विघटन शुरू होने से 1980 ई में इंदिरा गांधी पुनः सत्ता में आई। इंदिरा गांधी के 'जनता दल' की ओर से गैर-कांग्रेस पार्टी के मोरार देसाई की पार्टी की बागडोर अपने हाथ में संभाली। उन्होंने 1979 ई० में इस्तीफ़ा दे दिया। जिसके पश्चात् चरण सिंह जी ने देश की बागडोर संभाली और ठीक उनके छह वर्ष पश्चात् पुनः इंदिरा गांधी की वापसी हो गई। इंदिरा गांधी की सन 1984 ई० में हत्या के बाद राजीव गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस (आई) ने फिर से देश संभाला और दुर्भाग्य से राजीव गांधी की श्रीलंका के 'लिट्टे' नामक आतंकवादी समूह ने उनकी 1989 ई० में मृत्यु होने के पश्चात् फिर 'जनता दल' के वी.पी. सिंह ने देश की बागडोर संभाली और छह माह पश्चात् उनके हाथ से बागडोर चन्द्रशेखर जी के नेतृत्व में आई। उनका कार्यकाल भी लम्बा नहीं चला। उनके पश्चात् पी.वी. नरसिम्हा राव को 1991 ई० में कांग्रेस (आई) के नेतृत्व में सरकार बनी। भारतीय दल में एक इतिहास बनकर उभरे जबरदस्त प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 'भारतीय जनता पार्टी' नामक से अस्तित्व में आई। जिसके ठीक 13 दिन के पश्चात् सरकार गिर गई और 'यूनाइटेड फ्रंट' दल के एच.डी. देवगौडा ने राजनीति की कमान संभाली। 1999 ई० में पुनः 'नेशनल डेमोक्रेटिक अलायन्स' के रूप में पुनः अटल बिहार वाजपेयी ने नेतृत्व संभाला और पूरे 5 साल राज्य को संभाला। वर्ष 2004 में कांग्रेस (इंदिरा) की जबरदस्त वापसी हुई और देश के प्रधानमंत्री सिंहासन पर डॉ. मनमोहन सिंह को बैठाया गया और उन्होंने दो प्लान तक यानि 2014 तक कांग्रेस (आई) पार्टी में योगदान दिया। 26 जून 2014 भारतीय जनता पार्टी के प्रधानमंत्री उम्मीदवार और गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री एवं वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को लोकसभा 283 सीट से बहुमत मिला और उन्हें भारत देश की बागडोर सँभालने का सुअवसर मिला। अब वर्तमान 2024 में वही भारतीय जनता पार्टी भारत देश की बागडोर को संभाले हुये है।

भारत देश के दलों में लोकतान्त्रिक धर्मनिरपेक्ष दल, विदेश-लोकतंत्रात्मक दल, सांप्रदायिक प्रधानता दल और क्षेत्रीय राज्यतंत्र दल देखने को मिलते है। जिससे यह दल अपनी अस्तित्व रखते है। इनका वर्गीकरण हम आर्थिक, सामयवादी और सांप्रदायिक आधार पर कर सकते है। वैसे भारत जैसे बहु संस्कृति देश में अधिकतर अखिल भारतीय राजनीतिक दल, क्षेत्रीय दल, सांप्रदायिक दल और तदर्थ दल आदि हमें मिलते है। कहीं-कहीं हमें सुधारवादी दल, कमजोर दल, कैडर दल आदि के नामक दर्शन हो ही जाते है।

भीष्म साहनी के उपन्यासों में भारतीय दलों और वर्गों की भूमिका सामाजिक नियन्त्रण हेतु थी। तमस उपन्यास में कांग्रेस जन कल्याण के कार्य करवान दर्शाया है। यह दल अंग्रेजी सरकार से मिलजुलकर कार्य करने का इच्छुक रहा और बाद में नीति बदली। जिसमें गांधी जी देश को अलग होने वाली बात पर जरनैल अपन मत रखता है कि, "गांधीजी का फरमान है कि पाकिस्तान उनकी लाश पर बनेगा, मैं नामक पाकिस्तान बनने नहीं दूंगा।" यह दल देशभक्ति में रहकर स्वराज्य की मांग करता है। उस समय मार्क्सवादी दल और कांग्रेस में द्वंद्व रहा। मुस्लिम लीग अलग दल के रूप कार्य कर रहा था। क्योंकि मुस्लिम लीग ने अधिकतर सम्प्रदाय के आधार पर अपने सदस्यों को कार्यकारिणी में स्थान दे रखा है। हयातबख्श मुस्लिम लीग का अध्यक्ष रूप में कार्य करता है। वही हयातबख्श पाकिस्तान की मांग करता है। जिसको लेकर कांग्रेस में अक्सर इनकी अनबन होना आम बात हो गई थी। पर ये मामला गनामकर था शायद कोई बारूद तैयार हो रहा था बस एक चिंगारी की जरुरत थी। मुस्लिम वर्ग मार्क्सवादी दल पर बहुत कम विश्वास करते थे। 'तमस' उपन्यास में तदर्थ दल के रूप में सिखों को एक संदेश देकर जाते कहते है कि पैसे दे-लेकर सुलह कर ली जाए और उन्होंने अपने एलची द्वारा शेखों से बात शुरू कर दी थी। बख्शी कांग्रेस और 'सोशलिस्ट पार्टी' दोनों में रहता था। 'अमन कमेटी' रूपी शांति दल रूप में बनाया जाता है ताकि मुस्लिम और हिन्दू तथा सिखों की सांप्रदायिक दंगों में मारे गये लोगों की जान और माल का मुआवजा ले सकते है। इसका कार्यभार देवदत्त अपने ऊपर लेता है। भीष्म साहनी के 'बसंती' उपन्यास में एक बस्ती की पंचायत होती है जो बस्ती की छोटी मोटी समस्याओं को निपटने का काम करती है। जिसमें समाज के बहुत से वर्ग कार्य करते हैं। उस बस्ती में लोग उस पंचायत से ही कुछ न्याय प्राप्त कर लेते है परन्तु अधिकतर बार लिंग-भेद और जातिभेद का कारण न्याय केवल हवाओं में नामक पंख लगाकर उड़ जाता है। बुलाकी उपन्यास का पात्र पंचायत के पास चौधरी नाई को उसकी बेटी से विवाह करने की 1000 रुपये अग्रिम धनराशि देने पर नामक उसका ब्याह न होने उस पंचायत में अपन मुकदमा लेकर आता है। यह समाज की असामाजिक अवधारणा को दर्शाता है। यह पंचायत एक प्रकार का लघु राजनीतिक दल होता है। इसे हम निजी पंचायती शासन नामक कह सकते है। जिसका बड़े स्तर पर महत्व न होने पर नामक इसका उस बस्ती में एक रुतबा बन हुआ है। ये दल छोटे-मोटे फैसले सही-गलत टुकड़ों में सुनकर अपने खाने-पीने का जुगाड़ कर लेते है। हर देश में युवाओं का दल अवश्य होता है। 'नौजवान पार्टी' के रूप में हम भीष्म साहनी के उपन्यास 'कुन्तो' में पाते है। उपन्यास के नायक जयदेव का भाई सहदेव नौजवान पार्टी (जिसका निर्माण शहीद भगत सिंह किया था) से जुड़ा होता है। वह पार्टी के सदस्य हीरालाल के साथ आज़ादी के सपने को जल्द से जल्द साकार करने के लिए अंग्रेजी सरकार से लोहा लेते है और उनके लिए वह गरमदल की भूमिका में योगदान देते है। हीरालाल को एक कार्यकर्ता कहता है कि, "हम आज़ादी की रह देख रहे है, भाटियाजी, किसी फर्द की नहीं। हम पहुँचे न पहुँचे, पर एक दिन आज़ादी ज़रूर पहुँच जायेगी।" हीरालाल ने कहा, फिर खुफिया पुलिस के सिपाही की ओर, जो अनामक नामक चबूतरे पर दोनों टाँगें बैठा था, इशारा करता हुए बोला, "आज तो कोई जलसा नहीं, भाटियाजी, आज ससुराल क्यों पहुँच गए हैं? और यह अपने साथ अपने एक मुतबन्ना को ले आया हैं।" हीरालाल के साथ मनदी वाला मनदी रूप में कहता है कि:

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,
वतन पर मरनेवालों का यहीं बाकी निशाँ होगा।

इनके साहित्य के गुप्त राजनीतिक दलों की भूमिका को नामक दर्शाया गया है। भारतीय दलों के बारे में दुर्गादास जी लिखते है कि, "कांग्रेस के अंदर दो प्रमुख वर्ग हो गये थे। एक नेहरू के साथ परिवर्तन और दूसरा सरदार पटेल और प्रसाद के साथ गांधीवादी दृष्टि से सुधार चाहने वाला। एक तीसरा वर्ग प्रतिक्रियावादियों का नामक था जिसमें राजे महाराजे शामिल थे। भारतीय पूँजीपतियों ने कांग्रेस पर अधिकार जमा लिया था। इसी कारण स्वाधीनता भारत में विकास का पूँजीपति रास्ता अपनाया तथा साम्राज्यवादी शासन को ज्यों-का-ज्यों अपना लिया। वही अफसरशाही और अफसर जो अंग्रेजों के दलाल और जनता का दमन करने में मदद देते थे, अब शासन चला रहे है दूधनाथ सिंह के समय के दौरान राजनीतिक दलों का काफ़ी विकास हो चुका था। दूधनाथ सिंह ने भारतीय राजनीतिक दलों के रूप में कांग्रेस, बीजेपी, जनता दल, बसपा, सपा, माकपा आदि दलों को अपने उपन्यासों 'आखिरी कलाम', 'निष्कासन' और 'नमो अन्धकार' में उपरोक्त दलों की क्रियायों, मूल्यों, उद्देश्यों आदि का वर्णन किया है। दूधनाथ सिंह ने कांग्रेस पार्टी के प्रमुख सदस्यों में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री अपने पद को सँभालने से पूर्व के समय को दिखाया है। महात्मा गांधी के नेतृत्व में देश में आज़ादी की मांग और आज़ादी के बाद भारत देश में कांग्रेस के रूप में दिखाने की कोशिश की है। इन दोनों समय में काफ़ी अंतर दर्शाया गया है। दूधनाथ सिंह के 'आखिरी कलाम और निष्कासन' उपन्यास में राजनीतिक दलों का वर्णन किया है यह दल राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से अधिक प्रभावित थे। समाज में कांग्रेस पार्टी का विकास इनके उपन्यास में दिखाई गई है। बजरंग दल के रूप में दूधनाथ सिंह ने हिन्दू और मुस्लिम लोगों के बीच में संप्रदायी दंगों और मस्जिद तोड़ने जैसा दृश्य दिखाया है। हिन्दुओं के राजनीतिक दल से जुड़े लोगों में मुस्लिम वर्ग के प्रति दुश्मन भावों को दिखाया गया है। कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व में देश में सत्याग्रह आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन आदि का वर्णन दिखाया गया है। भारत में कांग्रेस पार्टी की छिपी सच्चाई को दिखाया गया है जिसमें जवाहर लाल नेहरू को अंग्रेजी शासन में उनके प्रति सबसे नरम भारतीय व्यक्ति में रूप में दिखाई देता है। दूधनाथ सिंह एक समग्र राजनीतिक में सुधार हेतु अपनी लेखनी चलाते है। दूधनाथ सिंह के 'निष्कासन' उपन्यास में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी को उपन्यासकार ने जोड़ा है। उन्होंने इस उपन्यास में उत्तर प्रदेश की महत्वपूर्ण दलों की सच्चाई को अवगत कराने का प्रयास किया है। उपन्यास की केंद्रबिंदु पात्र 'छोटी बहन' दलित होने का कारण छात्रावास की मैडम मैत्री के खिलाफ जब वर्तमान समाजवादी पार्टी के कुलपति और उपकुलपति के पास जाती है तो उसके साथ न्याय होना तो दूर उसके साथ भारतीय जातिवाद के अनुसार उसे दलित महिला मुख्यमंत्री मायावती के पास जाना पड़ता है परन्तु वहां उनसे मुलाकात न होने के कारण कोई सुनवाई नहीं हो पाती है। राजनेता बनने के बाद जनता को समय ही नहीं देते। जो उस समय एक केन्द्रीय राजनीतिक दल के इमेज के इस अंतिम भाग का सटीक टेक्स्ट नीचे दिया गया है:

रूप में प्रगति पर था। दूधनाथ सिंह धर्म पर जितना कटाक्ष करते है उतना अन्य पर कम। राजनीतिक दलों पर धर्मों का काफी प्रभाव दिखाई देता है कोई नायक राजनीतिक दल धर्म में बने कार्यक्रमों में राजनीतिक दखल नहीं देना चाहते है ? भारत देश में दलित राजनीतिक दृष्टिकोण को दर्शाया है। कुछ राजनीतिक दल ऐसे है जो खुद दलित होने के बावजूद नामक दलित के कामों को करने में काफी ऐतराज होता है। जातीय दल जाति के विपरीत दिखाया है। एक दलित लड़की कहानी पर 'निष्कासन' उपन्यास में मार्क्सवादी दल के वर्णन दिखाया गया है जिसमें मनोज नामकपात्र छोटी लड़की की मित्र के रूप में मदद करता है और अपने संगठन के माध्यम से उस लड़की को न्याय दिलाने का है परन्तु वह नामक दांव खाली जाता है। दूधनाथ ने निष्कासन उपन्यास में किसानों और मजदूरों की राजनीतिक दल सीपीआई का वर्णन करता है। जो किसानों और मजदूरों की हितों की रक्षा के लिए आन्दोलन आदि करते है।

भीष्म साहनी और दूधनाथ सिंह की लेखनी लगभग एक समान है केवल देशकाल और स्थानगत लघु मात्र अंतर विद्यमान है। भीष्म साहनी के राजनीतिक दल में 'खालसा दरबार' जैसा छोटा-सा राजनीतिक तदर्थ दल के रूप में हमें 'मय्यादास की माड़ी' उपन्यास में दिखाई देता है। वही साहनी जी ने 'तमस' उपन्यास में कांग्रेस पार्टी का नेतृत्व हमें गांधीजी के प्रभाव दिखाई देता है। मुस्लिम लीग का वर्णन नामक 'तमस' उपन्यास में दिखाया है जो मुस्लिमों के धार्मिक हितों और उनके मूल्यों के लिए कार्य करती है परन्तु राजनीतिक अंग्रेजों द्वारा होने से वह हिन्दुओं के साथ मारकाट कर लेते है। 'नौजवान पार्टी' जिसके संस्थापक शहीद भगत सिंह है उनका समाज में प्रभाव दिखाया गया है और वह गर्म दल के कार्यकर्ता आज़ादी की मांग को उठाते है। इस प्रकार भीष्म साहनी के उपन्यासों में भारतीय राजनीतिक दलों के आरम्भ का वर्णन करते है जिसमें वह अंग्रेजों के साथ मिलकर चलकर ही अपन कल्याण समझते है जबकि दूधनाथ सिंह में भारतीय राजनीतिक दलों पर, देश के दल और विदेशों में दलों का भारत के दलों आपस में प्रभाव दिखाई दिया है। समाज में वर्ण-व्यवस्था और वर्ग-विभाजन का विरोध दूधनाथ सिंह के उपन्यासों में दिखाई देता है। भारतीय राजनीतिक दल में धर्म की आड़ में छिपी घटिया राजनीतिक समाजशास्त्रीय दल का वर्णन किया है। भीष्म साहनी समाज दर्शन द्वारा राजनीति को प्रभावित करते है जबकि दूधनाथ सिंह राजनीति के द्वारा समाज को दर्शाते हैं।

संदर्भ:

1. Maxweber, Politics as Avocation in Pijoeno A. (ed) Political Sociology, 1971, p. 28
2. Sartorius, G., From the Sociology of the Politics to Political Sociology, in Lip set S.M. (ed) Politics and the Social Sciences, 1969, p.65
3. भीष्म साहनी, तमस, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 37
4. भीष्म साहनी, कुन्तो, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 223
5. दुर्गादास, भारत कर्जन से नेहरू और उसके पश्चात :, विल्को पब्लिशिंग हाउस, मुंबई, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 276